IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

प्रमुख प्रगतिवादी कवि एवं प्रगतिवादी काव्य का एक अध्ययन

डॉ. देशपति सार्मे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय महाविद्यालय, पुष्पराजगढ़ (म.प्र.)

अनिरूद्ध पाल
शोधार्थी, हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प.)

शोध सारांशः

प्रगतिवादी काव्य के प्रमुख कवि के रूप में सुमित्रानंदन पंत,सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह, सुमन, भवानी प्रसाद मिश्र, त्रिलोचन शास्त्री, रामविलास शर्मा नागार्जुन, इन आठ कवियों को चुना है। इनका जीवन–परिचय और रचनाओं का उल्लेख करते हुए इनकी काव्य उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। पंत का जन्म सन् 1956को ग्राम कौसानी जिला अल्मोड़ा में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगा दत्त, पंत और माता का नाम सरस्वती देवी है। प्रयाग विश्वविद्यालय में एक राजनैतिक सभा में महात्मा गाँधी की युगवाणी सुनकर आपने पढ़ना छोड़ दिया। आप हिन्दी, अग्रेंजी, बग्ला के विद्वान थें। हिन्दी के प्रमुख विचारकों में आपका स्थान है। पंत जी हिन्दी के युगान्तकारी कवि हैं आपके हिन्दी कविता को नये भाव, नयी भाषा और नये सौन्दर्य चित्र प्रदान किये गये है। पंत जी सौन्दर्य प्रिय और आशावादी कवि थे।

मुख्य शब्दः प्रगतिवादी काव्य, भाषा, सौन्दय, युगान्तकारी, राजनैतिक, महात्मा गाँधी, युगवाणी आदि।

प्रस्तावनाः

विद्यार्थी जीवन से ही ये काव्य–रचना करते आ रहे हैं और अभी तक इनकी साहित्यिक चेतना जागरूप है। उमर खैयाम की रुबाइयों का हिन्दी रूपान्तर 'मधुज्वाला' नाम से। इनके काव्य–संग्रहों एवं नीति नाट्यों से चुनी हुई कविताओं का संकलन पल्लविनी आधुनिक कवि, चिदम्बरा, कवि श्री रश्मिबन्ध, सुमित्रानन्दन पंत आदि नामों से प्रकाशित हो चुके हैं।

अल्मोड़ा जिले के पर्वतीय ग्राम कैसानी में सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म सन् बीस मई 1900 हो हुआ था। माता सरस्वती देवी पुत्र को जन्म देकर 6 घण्टे पश्चात् ही स्वर्ग सिधार गयी। पिता पं0 गंगादत्त पन्त एक अंग्रेज के चाय बगीचे के मुनीम और लकड़ी के ठेकेदार थे। यह एक समृद्ध परिवार के बालक थे। तीन बड़े भाइयों के पश्चात पिता के सबसे छोटे पुत्र थे। बुआ की गोद में इनका पालन–पोषण हुआ। पंत जी बचपन से ही बहुत ही बड़े शान्त और सीधे स्वभाव के बालक थे। बालसुलभ चंचलता इनमें तनिक भी नहीं थी । इन्हें न खेलने का शौक था न ही कूदने का, लड़ाई झगड़े से भी सदैव दूर ही रहते थे। एकान्त प्रिय होने के कारण घर से बाहर निकलना इन्हें अच्छा नहीं लगता था। हाँ, अपने मकान के पास खड़े देवदार के वृक्षों को देखना और उसके गिरते पीले चूर्ण से मानों आनन्दित हो उठते हो । हिम शिखरों के रजत–रूप को प्रातः सायं सुवर्ण मय होते देखकर भी ज्यादा चकित होते थे ।

11 वर्ष की अवस्था में पंत को अल्मोड़ा के गवर्नमेन्ट हाई स्कूल के चौथी कक्षा में प्रवेश दिलाया गया । यहीं इनकी रुचि हिन्दी की ओर जागृत हुई। 1916 में इनकी प्रथम रचना अल्मोड़ा अखबार में छपी। अपनी इस काव्य प्रतिभा को ज्यादा सम्पन्न बनाने के लिए पन्त जी ने ''छन्द प्रभाकर'' और काव्य प्रभाकर के साथ रीतिकालीन कवियों का अध्ययन किया। ''मतिराम'' और ''सेनापति'' इन्हें बहुत ही प्रिय थे। 1919 से ही इनमें कविता–प्रेम इतना बढ़ा कि ये एक–एक दिन में अनेक कविताओं की रचना करने लगे। ये कविताएँ प्रारम्भ से ही खड़ी बोली में थी इस समय पन्त जूनियार हाई स्कूल के छात्र थे।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30041

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

9वीं कक्षा उत्तीर्ण कर पंत जी ने वाराणसी के ''जयनारायण हाई स्कूल'' में प्रवेश लिया। यहाँ हाई स्कूल पास किया, बंगाल साहित्य का अध्ययन किया, सरोजनी नायडू की कविताएँ और प्रसाद का ''झरना'' पढ़ा। काव्य रचना कीऔर बराबर अपनी रुचि रखते थे । इतिहास की मुख्य–मुख्य घटनाओं को तो ये पद्यबद्ध करके रट लिया करते थे । प्रयाग आ कर ''म्योर कालेज इलाहाबाद'' इण्टर में प्रवेश लिया । यहाँ के एक कवि सम्मेलन में पन्त जी ने अपनी ''स्वप्न'' कविता पढ़ी जो श्रोताओं द्वारा बहुत पसंद की गयी अब नौ सिखुए कवि न रह कर ख्याति प्राप्त कवि बन रहे थे। पंत का अधिकतर समय साहित्य पढ़ने और काव्य रचना में व्यतीत होता था । ''कीट्स'' और ''शैली'' की कविताएँ इन्हें बहुत प्रिय थी।

1921 के असहयोग आन्दोलन में कालेज छोड़ दिया। ये इण्टर न कर सके। इस आन्दोलन से एक लाभ अवश्य हुआ कि शिक्षा के क्षेत्र से सन्यास ग्रहण कर लिया और सरस्वती की एकांत काव्य साधना में लीन हो गये । कवि रूप में पंत ने खूब यश अर्जन किया। कवि सम्मेलन और हिन्दी पत्र–पत्रिका पंत की कविताओं की बाट जोहते थे।

इसी बीच पन्त ने उपनिषदों, रामकृष्ण, विवेकानन्द, रामतीर्थ के वेदान्त ग्रन्थों का अध्ययन किया। ''कान्ट' और हेगेल' जैसे पाश्चात्य दार्शनिकों को भी पढ़ा चिन्तन और मनन किया। टाल्स्टाय के मेरा धर्म और उसके अनन्त पाप के सिद्धान्तय'' ने भी दिल को थोडा अपनी ओर आकर्षित किया। पन्त जी इस समय परमार्थ कें सत्य और उसके सनातन रहस्य को ढूढने का प्रयत्न कर रहे थे, पर अभी उसका ज्ञानानुभव नही हो पाया था । इन सभी ने उन्हें जीवन और जगत के प्रति दुखबादी बना दिया था। इसी बीच मझले भाई ने परिवार पर भारी ऋण छोड़ कर स्वर्ग सिधार गये, जैसे–तैसे यह ऋण अदा किया गया किन्तु परिवार का आर्थिक ढांचा टूटकर बिखर गया । पन्त जी को अब तक आर्थिक परेशानी नही थी किन्तु अब नयी चिन्ता के बोझ भार ने दर्शन से परेशान कवि के मन को और भी परेशान बना दिया। परिणाम स्वरूप इनका स्वास्थ्य गिर गया।

प्रकृति पन्त के काव्य की जननी है। ''वीणा'' का मुख्य वर्ण्य–विषयक ही प्रकृति है। यहा प्रकृति की छोटी–छोटी विविध वस्तुओं को अपनी कल्पना से भरकर काव्य–सामग्री एकत्रित की है। फूल, पत्ते, चिडिया, बादल, इन्द्रधनुष, ओस, तारे नदी झरने, उषा, सन्ध्या आदि खिलौने की तरह इनकी बाल कल्पना की पिटारी को सजाएं हुए हैं।

इन सरस भावनाओं को प्रस्फुटित करती हुई इनकी काव्य–कल्पना मानों अपनी समवयस्का बाल प्रकृति के गले में बाहें डालकर प्रकृति सौन्दर्य के छायापथ में बिहार कर रही है–

कौन अकेली खेल रही माँ,
वह अपनी वयबाली में ।

इस दृश्य को देखकर लगता है जैसे स्निग्ध, मधुर प्रकृति की गोद, मां की तरह कवि के किशोर जीवन का पालन एवं परिचालन करती है। ''सोने का गांन'' निर्झर का गान'' मधुकरी, निर्झरी, ''विश्ववेणु' 'बीचिविलास'' आदि रचनाओं के प्रकृति की अतुल सौन्दर्य से कवि ने अपने जीवन के ताने बाने को बुना है ।

इससे स्पष्ट है कि प्रकृति ने ही अपने में व्याप्त एक रहस्यमय और विराट सौन्दर्य चेतना के प्रति कवि के भीतर अज्ञात आकर्षण को जन्म दिया। "वीणा" और ''पल्लव'' की अनेक रचनाओं में प्रकृति की इस सौन्दर्य चेतना के प्रति अज्ञात आकर्षण और कुतूहल की श्रृष्टि हुई है। प्रकति की यह सौन्दर्यमयी शक्ति ही देवीमाता, सखी और प्रियतम के रूप में अभ्याव्यक्त हुई । ''वीणा'' और पल्लव की अनेक रचनाओं में प्रकृति कवि की ''आध्यात्मिक मॉ बन कर आयी है, जिससे पन्त अपने हृदय की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए विस्मय भरे प्रश्न पूंछते हैं, कभी प्रकृति को ''सखी'' जान अपने सुख–दुःख की बात करते है । ये सरिता से गीत सीखने के लिए उसके पास जाते है । बाल विहंगणि से ''प्रथम–रश्मि के आगमन पहचान का रहस्य जानना चाहते हैं–

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि! तूने कैसे पहचाना?

कहां, कहां है बाल–बिहंगिणि! पाया तूने यह गाना ?

सुमित्रानंदन पन्त के छायावाद का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। कवि के मतानुसार–

''प्राकृतिक चित्रों में कवि की अपनी भावनाओं के सौन्दर्य का और अपनी भावनाओं में प्राकृति सौन्दर्य का छाया–चित्रण की छायावाद हैं।

पन्त के छायावाद की अभिव्यक्ति प्रकृतिं में मानवीय चेतना के आरोप द्वारा हुई है। इनका छायावाद रूढ़िगत न होकर स्वच्छन्द और सरस है । दर्शन–मूल्य न होकर कला–मूलक है। इस प्रकार इनका छायावाद वस्तुतः विषयगत न होकर शैलीगत ही है ।

अन्त में कवि इस रहस्य को जान ही लेता है। वह अनुभव करता है कि येमेरे सुकुमार प्रियततम है जो मुझे कभी उभड़ते पत्तों के साथ और कभी लहरों से निज हाथ बढ़ाकर उस पार अपने पास बुलाते है–

कभी उड़ते पत्तों के साथ, मुझे मिलते मेरे सुकुमार,

बढ़ा कर लहरों से निज हाथ, बुलाता फिर मुझको उस पार ।

''युगान्त'' से आगे'' युगवाणी'' और 'ग्राम्या' में कवि, कल्पना के स्वप्न नीड को तजकर वस्तुजगत की यथार्थ धरती पर उतर आता है यहाँ मूलस्वर भौतिकवादी है और छायावादी रूप प्रगतिवाद बन जाता है। मानववाद की अन्तर्मुखी साधना यहाँ बहिर्मुखी बन गयी है। ''युगवाणी'' और ''ग्राम्या'' प्रगतिवादी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। ये रचनाएं उस समय की है जब प्रगतिवादी काब्य घुटनों के बल चल रहा था इन रचनाओं ने प्रगतिवादी पैरों को दृढ़गतिशीलता प्रदान की है।

"गुजन" और "ज्योत्स्ना'' के आत्मवादी स्वर जो ''ग्राम्या'' और ''युगवाणी" के भूत में दब गये थे, ''स्वर्णकिरण'' ''स्वर्णधूलि'' और ''उत्तरा'' में पुनः तीव्र हो उठा। वास्तव में जिस मानव संस्कृति के अभ्युत्थान का स्वप्न कवि ने ''ज्योत्स्ना'' में देखा था, समाजवाद उसका साधन मात्र था ।

कवि देखता है कि आज मानव जाति स्वार्थ संघर्ष, वर्ण–भेद की कुत्साओं से घिरा हुआ है मानवता के मंदिर मे यंत्र और विज्ञान की बिभीषिका का नर्तन हो रहा है। सामाजिक जीवन पूर्णतः विश्रृंखल, विषादमय और प्रतीड़ित है। इस सार्वभौम अद्यः पतन मूल कारण है–मानव जीवन में सन्तुलन का आभाव। आज मनुष्य अपने अन्तः स्वरूप को भुलाकर वाह्य जीवन में ही खो गया है।

''स्वर्ण–किरण, ''स्वर्ण–धूलि'', ''उत्तरा'' में मूर्च्छित अन्तर्जीवन को चौतन्य बनाने का प्रयत्न हुआ है कवि का सन्देह है कि भौतिक वैभव और आत्मिक ऐश्वर्य के समन्वय से ही मनुष्य देवत्व को प्राप्त कर सकता है। मानव संस्कृति निर्माण कर सकता है ।

कवि का यह नवीन विचार दर्शन अरविन्द के दार्शनिक धरातल पर टिका हुआ। यहाँ कवि अखिल मानवता के भेदों को मिटा कर एक अखिल विश्व संस्कृति के निर्माण के लिए उत्सुक है। वह पूर्व व पश्चिम के देश–भेद को अन्तश्चेतनावाद के समन्वय सूत्र से जोड़कर विश्व संस्कृति का चरम उन्मयचाहते हैं।

पन्त के इस अन्तश्चेतनावाद का आधार श्रृष्टि के प्रति विरक्ति नही, वरन् मनावैज्ञानिक अनुरक्ति है। मानव का पूर्ण विकास आध्यात्मवाद और भौतिकवाद दोनों के ही पूर्ण उत्कर्ष से सम्भव है। एंकांगी विकास मानव और जीवन के लिए अहितकर होगा। फलतः वे मूर्त और चेतना अध्यात्म और भौतिकता, मन और मस्तिष्क का समन्वय करके एक पूर्ण मानवीय विकास की कल्पना करते है। अपनी इस काव्य सृष्टि द्वारा पन्त ने मानवता के नाश के स्थान पर निर्माण कर जड़ के स्थान पर चेतना का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

विषमता के स्थान पर समता का, अनेक्य के स्थान पर ऐक्य का, घ्रणा के स्थान पर प्रेम का और भूत के स्थान पर आत्म शक्ति के पुनरूत्थान का सन्देश दिया है।

अनेंक काव्य संकलनों के बाद पंत ने ''लोकायतन'' नामक महाकाव्य साहित्य जगत को प्रदान किया। ''लोकायतन'' नव सांस्कृतिक चेतनात्मक काव्यधारा की प्रतिनिधि रचना है। इसमें कवि ने भूत और भविष्य संस्कृति और समाज, अध्यात्म और भैतिकता, दर्शन और विज्ञान का समन्वय किया है। इसमें गहन मानवीय चेतना की उर्ध्वोमुखी यात्रा की वर्णन प्रस्तुत है।

इसमें द्विवेदी युगीन महाकाव्यों की भाँति अतीत का गौरव–गान अछूतोद्वार नारीकी महत्ता का प्रतिपादन अथवा किसी नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना का प्रयास नहीं है और नही इसमें अधुनातन महाकाव्यों की भाँति समस्याओं के द्वन्द्वात्मक–चित्रण संशय–ग्रस्त चेतना का अंकन तथा मनेवैज्ञानिक धरातल पर मानव–व्यत्तित्वों के विखराव का परिचय है। ''लोकायतन'' में इनसे अलग भविष्य के लोक–जीवन एवं लोक संस्कृति की गाथा को वाणी का परिधान पहनाया गया है। इसमें मानव के लिए इतिहास, पुराण, राजनीति संस्कृति, कला विज्ञान के नये अर्थ एंव संकेत प्रतिपादित किये गये है।

आधुनिक युग की कलाकृति होने के कारण इसके महाकाव्यात्मक की सफलता–असफलता का निर्णय नयें प्रतिमानों द्वारा ही किया जा सकता है। वस्तुतः लोकायतन का कवि किसी व्यक्ति घटना या समस्या को केन्द्र बिन्दु बनाकर नहीं चला है। ''लोकायंतन'' उस ''विराटता'' को लेकर चला है पात्र और घटनाएं जिनके भाग है युग और परिवेश जिसकी लघु इकाइयाँ है । अतः लोकायतन के महाकाव्यात्मक को आधार उसकी विराट चेतना और भविकयोन्मुखी विराट जीवन–दृष्टि की विराट कल्पना है।

निःसन्देह लोकायतन हिन्दी महाकाव्यों की परम्परा का एक विकसित चरण है।अपने भाव जगत की भाँति पंत की कला भी सौन्दर्य प्रिय है। कलाकार केव्यक्तित्व की भांति सुकुमार और कोमल है। निराला की भांति तेज नहीं वरन बालारूण रश्मियों का हल्का प्रकाश है। इनमें पुरुसत्व का ओज नहीं, नारी की कमनीयता है । ऐसी कला को पंत के काव्य में अनन्य प्रधानता मिली है। भावों से अधिक कला के मोह–जाल में उन्हें अधिक उलझाया है। इसमें भी सन्देह नहीं कि छायावादी शैली का कलात्मक सौन्दर्य केवल पन्त के काव्य में ही अपने पूर्ण उत्कर्ष को प्राप्त हुआ है। पन्त का छायावाद भाव–परक न होकर कलापरक है। पन्त जी के ऐसे कला मूलक काव्य की पहली विशेषता उसकी अपरिमेय कल्पनाशक्ति हैं

सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला''

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बसन्त पंचमी 1897 ई0 मेदिनीपुर (बंगाल) में हुआ था इनके पिता पं0 रामसहाय त्रिपाठी थे इनकी मृत्यु 15 अक्टूबर 1961 ई0 को हुई थी ।

रचनाएं :–

निराला में जो कुछ साहित्य जगत को दिया वह सभी उनके जीवन मन्थन का अमृत है। युग जीवन का प्रतीक बन अपने जीवन की अनुभूतियों को उसने कविता, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, आलोचना, साहित्य आदि अनेक रूपों में हमें प्रदान किया है।

काव्य :–

अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, आर्णमा, अपरा, नयेप, बेला, अर्चना आराधना, गीतगुंज ।

उपन्यास :–

अलका, निरूपमा, अपसरा, प्रभावती, काले कारनामें, चमेली तथा चोटी कीपकड़ (अपूर्ण)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

कहानी संग्रह :–

लिली, सुकुल की बीबी, चतुरी चमार देवी ।

रेखाचित्र–कुल्लीमाटय बिल्लेसुर बकरिहा ।

निबन्ध संग्रह :– रवीन्द्र कविता कानन, प्रबन्ध–पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा,पंत और पल्लव चाबूक चमन

जीवनी :– मुक्त ध्रुव, महाराण प्रताप, मुक्त प्रहलाद, भीष्म, शकुन्तला

अनुवाद :–महाभारत श्री रामकृष्ण वचनामृत रामायण (विनय खण्ड) भारत में विवेकानन्द, बंकिम चन्द्र चाटोपाध्याय के उपन्यास आनन्दमठ, चन्द्रशेखर दुर्गेशनन्दनी, देवी चौधरानी, युगलांगुली, रजनी राजरानी, विष्णु–वृन्दा, तुलसी कृत रामायण तथा वात्सायन कृत कामसूत्र की टीका और इसके अतिरिक्त इनके बहुत से साहित्य अप्राप्य हैं।

बचपन से ही निराली मनमौजी स्वभाव के थे किसी भी प्रकार का बन्धन इन्हें प्रिय नहीं था। मेदिनीपुर के स्कूल में ही इनकी शिक्षा, दिक्षा हुई, किन्तु यहाँ पढ़ाई में इनका मन नहीं लगता था पिता की ओर से भी अनेक ताड़नाए मिलती थी, जिसके वे आदि हो चुके थे। अध्ययन की अपेक्षा इन्हें कुश्ती लड़ने अश्वारोहणकरने क्रिकेट, फुटबाल खेलने में ज्यादा आनन्द मिलता था। संगीत में काफी रूचिथी जब तब हारमोनियम पर कुछ न कुछ गया ही करते थे। 13 वर्ष की अवस्था में मनोहरा देवी से विवाह हुआ जो बड़ी रूपवती और गुणवती थी हिन्दी की प्रेरणा कवि को अपनी पत्नी से ही मिली। वैवाहिक जीवन सुखमय था, अचानक एक कन्या व एक पुत्र को जन्म देकर इन्फलुएंजा की बिमारी इनकी पत्नी चल बसी। निराला के युवा प्रणयी हृदय पर मह अनन्य प्रहार था। वियोग से व्यथित होकर घण्टों वे श्मशान पर बैठे रहते और कहीं कोई चूड़ी का टुकड़ा या हड्डी मिल जाती उसे हृदय से लगाये हुए घूमते रहते। इसके बाद ही पिता की मृत्यु हो गयी। जीवन यापन की समस्या निराला जी के सामने खड़ी थी। अतः इन्होंने महिषादल में नौकरी की किन्तु स्वच्छन्द पसन्द मन यहाँ ज्यादा दिन नही लगा। धीरे–धीरे कलम के मजदूर बनगये। अनुवाद मौलिक आदि जो भी काम मिलता उसे करते। इन दिनों निराला जी को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। किन्तु इनका सरल और अपराज व्यक्तित्व कहीं भी अपदस्त नहीं हुआ।

इनकी कला 'चित्रययता' संयुक्त है। ये अपनी कला तुलीका से वातावरण की रेखाओं, प्राकृतिक दृश्यों, स्त्री पुरुषों की विविधता भंगिमाओं में ऐसे रंग भरते हैं कि वे सजीव चित्र से ही नहीं बन पाते वरन् बोलते हुए से प्रतीत होते है। इनके दीन 'भिक्षुक' और दीन दलित विधवा के चित्र' 'राम की शक्ति पूजा में पराजित मान हृदय राम के चारों ओर के वातावरण के चित्र, जूही की कली की श्रृंगारिक भंगिमाए कितनी सजीव और सौन्दर्यमयी है।

निराला को शब्दों की ध्वनि पर असाधारण अधिकार है। साधारण शब्दों से चमत्कारी प्रभाव पैदा करने की अद्भुत क्षमता निराला में ही है। यह एक ओर 'फूलदल तुल्य कोमल लाल ये कपोल गोल' जैसी ललित पदावली की रचना करते हैं, वहीं है ''अमानिशा उगलता गगन धन अन्धकार'' जैसी गर्जना भी करते है । इनकी लघु पदावली विषाद भावों को बहन करती हुई चलती है। इस दृष्टि से इनके शब्द चयन की कसावट दर्शनयी है। इनके कला की शैली अलंकृत है। स्थापत्य कला में अलंकरण के लिए, के लिए, सुन्दर मूर्तियों के समान उपमाओं, रूपको और अनुप्रासो की भव्य छटा है, रूपसे से लाज लगी । कवता में जो रूपक की पूर्णता हैं, वह कवि की काव्य कला के अ लंकृत सौन्दर्य का परिचायक। रत्नावपली के केशजाल को मेघ माला और तुलसी के मन को मयूर का रूप का दे, इन्होंने अभिनव कलाकारों का सौन्दय विखेरा है।

अन्ततः निराला विद्रोह और परिवर्तन के कवि हैं इन्होंने अपने जीवन में, अपने साहित्य में, अपनी कला में जड़ता और अप्रगतिशीलता का बहिष्कार किया है और सर्वत्र सचेतना और प्रगतिशील मार्ग की और कदम बढ़ाया है । इसीलिए ये हिन्दी के युग प्रवर्तक और युग विधायक कवि है ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

केदारनाथ अग्रवाल

1 अप्रैल, 1911 को केदारनाथ अग्रवाल का जन्म हुआ। इनके पिता श्री हनुमान प्रसाद माता श्रीमती घसिटले देवी तथा पत्नी श्रीमती पार्वती देवी थी ।

शिक्षा

प्रारम्भिक शिक्षा 1 और 2 कमासिन गांव की पाठशाला में, कक्षा 3 से लेकर 6 तक रायबरेली के गवर्नमेंट हाई स्कूल में 7वीं कक्षा 'कटनी' मध्य प्रदेश के म्युनिस्पल स्कूल 8वीं कक्षा जबलपुर जून, 1927 में पूरी की, हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट, इलाहाबाद के क्रिश्चियन कालेज से की, इलाहाबाद विश्वविद्यालय सेबी0ए0 तीन वर्ष, जुलाई सन् 1932 से 1935 तक पूरी की तत्पश्चात् कानून के अध्ययन हेतु नवम्बर, 1945 तक कानपुर में हुई ।

केदार जी ने फरवरी 1938 से इलाहाबाद उच्च न्यायालय से वकालत प्रारम्भ किया किन्तु 1975 में बांदा की कचहरी में ही वकालत करने लगे। यहां बांदा में 16 मार्च, 1963 से 7 जुलाई 1970 तक सरकारी 'फौजदारी' के वकालत में लीनहै।

जिस समय इलाहाबाद में थे वही इनका सम्बन्ध सन् 1938 में प्रगतिशील आन्दोलन से हुआ और यही निराला और रामविलास शर्मा जी से भी सम्पर्क स्थापित हुआ । केदार जी की रचनाएं 'हंस' पत्रिका में बराबर प्रकाशित होती रही है ।

रचनाएँ

नींद की बादल–	अगस्त1947 में प्रकाशित प्रथम काव्य कृति है।
युग की गंगा	मार्च 1947 में प्रकाशित
लोक और आलोक	सन् 1957 में प्रकाशित
फूल नहीं रंग बोलते हैं	अक्टूबर 1965 में प्रकाशित
आग का आइना	सन् 1970 में प्रकाशित
गुल मेंहदी	जनवरी, 1978 में प्रकाशित
पंख और पतवार	जनवरी, 1979 में प्रकाशित
समय–समय पर	(निबन्ध संग्रह) 6 जुलाई, 1970 में प्रकाशित
देश–देश की कविताएं	यह अनुवादित रचनाओं का संग्रह सन् 1970 में प्रकाशित
हे मेरी तुम	मई 1981 में प्रकाशित
मार प्यार की थापें	मई 1981 में प्रकाशित
कहे केदार खरी खरी	1982 में प्रकाशित

इसके अतिरिक्त लोकभाषा बुन्देल खण्डी में आल्हा की रचना ।

बम्बई का रक्त स्नान, 1981 में प्रकाशित किन्तु इसका रचनाकाल 1946 है । क्योंकि यह सर्वप्रथम 1946 में 'हंस' पत्रिका के 'अगस्त' अंक में प्रकाशित हुआ था।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की योजना 'देव पुरस्कार ग्रन्थावली के आधुनिक कवि केदारनाथ अग्रवाल, 1978 में प्रकाशित ।

इसके अतिरिक्त केदार जी रूसी और जर्मनी भाषाओं में कविताओं का अनुवाद भी किए हैं ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

संक्षिप्त में केदार जी के रचनाओं के बारे में जानकारी इस प्रकार हैं ।

केदार नाथ अग्रवाल हिन्दी में प्रगतिवाद के सहृदय भावुक कवि है । 'नींद के बादल' में अधिकतर कवि ने प्रेम व रोमानी भाव की सृष्टि की है। यह नामकरण एक सांकेतिक है । कवि ने स्वयं लिखा है ।

''नींद के बादल की कविताएँ वैयक्तिक है फिर भी मेरे कवि विकास की पहली मंजिल के स्पष्ट चिन्ह है, जो अभी तक ज्यों के त्यों कागज के कलेजे पर जमे हुए हैं, हीरे के ऊपर नक्स हो गये हैं।''

कवि ने अपनी रचनाओं में बड़ी ही ईमानदारी, सादगी व स्वस्थता के साथ सामाजिकता की प्रतिष्ठा की है । कवि का किसी भी भाव को सीधे–साधे एवं निष्कपट ढंग से कहने का अन्दाज निराला है।

'नींद के बादल' काव्य संग्रह को श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. प्रेम सम्बन्धी
2. प्रकृति सम्बन्धी
3. छायावादी (रहस्यवादी)
4. यथार्थ सम्बन्धी

'नींद के बादल' प्रेम में कवि ने वैयक्तिक प्रेम को स्थान दिया है। भारतीय समाज परिवार का प्रारूप सामन्तों प्रणाली पर आधारित है। जहां पति, पत्नी का प्रेम एक सीमित दायरे में बंधा होता है। यहां स्वतन्त्रता नाम की वस्तु नहीं । केदार जी ऐसे प्रेम के विरोधी हैं वे प्रेम में किसी प्रकार का बन्धन स्वीकार नहीं करते इनका प्रेम सहज, स्वाभाविक और निर्मल गुणों की खान है।

केदार नाथ की भाषा शैली पूर्णतः छायावादी है, जिसमें कहीं–कहीं देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है, जो नहीं के बराबर है। छायावाद के प्रमुख स्तम्भ की स्पष्ट छाप यहां देखी जा सकती है।

'युग की गंगा' हिन्दी में प्रगतिवादी काव्य विकास का मार्ग चित है। इसमें भारतीय जीवन का यथार्थ रूप साकार हो उठा है, जिसमें जीवन सौन्दर्य और मनुष्यता को प्रतिष्ठित किया गया है।

डॉ0 केदारनाथ सिंह ने कहा है–

''त्रिलोचन एक खास अर्थ में आधुनिक है और सबसे आश्चर्यजनक तो यह है कि आधुनिकता के सारे प्रचलित साँचों को अस्वीकार करते हुए भी आधुनिक है। दरअसल वे आज की हिन्दी कविता में उस धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आधुनिकता के सारे शोर–शराबे के बीच हिन्दी भाषा और हिन्दी जाति की संघर्षशील चेतना की जड़ों को सींचती हुई चुपचाप बहती रही है असल में त्रिलोचनकी कविता जानी पहचानी समकालीन कविता के समानान्तर एक प्रति कविता की हैसियत रखती है और इसलिए इस बात की मांग करती है कि उसका मूल्यांकन करते समय आधुनिक कविता के प्रचलित मान मूल्यों को लागू करने की जल्दबाजी न की जाय। ये कविताएं पाठक से और उससे भी ज्यादा आलोचक से, एक सीधे और मुक्त सम्बन्ध की अपेक्षा रखती है । क्योंकि इनका मूल्य कही बाहर नहीं, इन्हीं के भीतर है जैसे लोहे की धार लोहे के भीतर होती है।

त्रिलोचन एक विषम धरातल वाले कवि है । ये उस मिलन बिन्दु पर खड़े है जहां से प्रगतिवाद और प्रोगवादी आन्दोलन एक दूसरे से अलग होते हैं। ये एक साथ रूपवादी आन्दोलन के खतरे और प्रगतिवादी आन्दोलन के नारेबाजी से सावधान है।

ये जन–जीवन के बीच भले ही ''भोरई केवट के घर'' हो यथार्थ दृष्टि से कहते–सुनते हंस गाकर जीवन मार्ग पर आगे बढ़ते हुए प्रगतिवाद नाम को परितार्थ करने के लिए प्रयत्नशील दिखायी देते हैं । मार्क्सवादी अथवा सैद्धान्तिक मान्यताएं इनके

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

काव्य में ''व्यवहार'' बनकर प्रस्तुत हुई है । ''धरती'' संग्रह की अनेक विताएं इसी ओर संकेत करती है, जब कवि सहज आत्मीय ढ़ंग से अपनी बात को व्यक्त कर देता है।

शोध निष्कर्षः

निर्ष्कषतः कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी कवियों ने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को लेकर काव्य रचना की है। लोकमंगल और लोक कल्याण के आशावादी स्वरों को लेकर काव्य रचना की है लोकमंगल और लोक कल्याण के आशावादी स्वरों को उसने आस्था और विश्वास के साथ अपने काव्य में प्रतिध्वनित किया है। जीवन के प्रति संघर्षात्मक दृष्टिकोण के कारण उसकी रचनाओं में एक आकर्षक प्रखरता आ गयी है। नये जीवन के संकल्पों तथा जनवादी संस्कृति के निर्माण की आकांक्षाएं भी उनके काव्य में मूर्त हुईहै । कवि से वर्तमान जीवन के भावी स्वप्नों को मूर्तिमान करने की पूर्ण आशा की जा सकती है। प्रगतिवादी काव्यधारा में कवि की जो उपलब्धियां है, वे उसे प्रगतिवादी काव्य के एक समर्थ और सामाजिक दृष्टि से जागरूक कवि का गौरव प्रदान करती है। प्रगतिवादी काव्य की दृष्टि से कवि की रचनाएं समृद्ध एवं धनी कही जा सकती है जिसमें प्रचलित रीति–रिवाज, उत्सव, नाटक, बिरहा, आल्हा, नृत्य, मुहावरा आदि सभी का स्वरूप देखा जा सकता है। कवि एक सजग सामाजिक और जागरूक प्रहरी सिद्ध होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. युगवाणी "समाजवाद गाँधीवाद, पन्त, पृ0–29
2. युग पथ, वांसो का झुरमुट, पंत पृ0–27
3. नौका विहार, पंत पृ0–101
4. युगान्त, पंत पृ0–16
5. अपरा, ध्वनि निराला, पृ0–110
6. गीतिका, निराला, कैसी बजी बीन, पृ0–104
7. श्रेत्रिय, डॉ0 प्रभाकर सुमन रू मनुष्य और श्रष्टा, पृष्ठ–7
8. मिश्र,डॉ0 शिव कुमार नया हिन्दी काव्य पृ0–93
9. सुमन, शिव मंगल सिंह हिल्लोल पृ0– 81
10. सुमन,शिव मंगल सिंह जीवन के गान, भूमिका से पृ0–12
11. जीवन के गान 'सुमन', पृ0–18
12. जीवन के गान 'सुमन', पृ0–61
13. प्रलय स्तजन, 'सुमन, पृ0–484
14. प्रलय सृजन, भूमिका से पृ0–84
15. विश्वास बढ़ता ही गया, सुमन, पृ0–53
16. हिन्दी साहित्य कोष भाग से, पृ0–468
17. दूसरा सप्तक (द्वितीय संस्कर), पृ0–3
18. मिश्र, डॉ0 राजेन्द्र का शोध प्रबन्ध हिन्दी की तत्संबंधी वादों का सापेक्षिक अध्ययन, पृ0–367।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

19. मानव,विश्वम्भर नयी कविता पृ0—30
20. हंस, जून, 1949 अंक 1, पृ0—49
21. तीन दिन तीन रात नागार्जुन ।
22. मिश्र,उमेश चन्द्र प्रगतिवादी काव्य पृ0—168